मोक्ष मार्ग मे रत्नत्रय की भूमिका - अनेकांत की द्रष्टि मे

Prof. S. L. Godawat
Former Dean, Rajasthan College of Agriculture
Maharana Pratap University of Agriculture & Technology, Udaipur
313001(Raj.)
shyamgodawat@gmail.com

09414850711

स्वभाव से प्रत्येक द्रव्य अनेक धर्म से युक्त होता है । इसलिये प्रत्येक द्रव्य स्वभावतःही अनेकांतमय है । उसका परीक्षण - निरीक्षण परिज्ञान करने के लिए नय -प्रमाण -निक्षेप आदि की आवश्यकता होती है । जब तक स्याद्वाद और अनेकांत द्रष्टि से यथार्थ रूप से वस्तु का विश्लेषण नहीं किया जाता है तब तक सत्य भी असत्य और असत्य भी सत्य प्रतिभासित होता है । इसलिये सत्यग्राही सम्यकद्रष्टि जीव अनेकांत एवं स्याद्वाद के द्वारा वस्तु स्वभावात्मक धर्म को बीना परीक्षण किये स्वीकार नहीं करता है । अनेकांत ही धर्म की सिद्धी करने वाला है । अनेकांत जैन धर्म का प्राण है । प्रत्येक वस्तु स्वरुप को अनेकांत द्रष्टि से ही समजना चाहिए । एकांत से मिथ्या हो जाता है और मिथात्व अनंत संसार भ्रमण का कारण है । अमृत चन्द्र सूरी ने पुरुषार्थ -सिद्द्युपाय मे कहा भी है -

"एकान्तवाद दूषितं पर समया नपि च नाकामक्षेत" ॥ 24 ॥

सम्यकद्रष्टि जीव अनेकंतात्मक धर्म के प्रति समर्पित भाव रखते हुये भी एकान्तवाद से दूषित मिथ्या धर्म से पूर्ण पृथक रहता है । आत्मा स्वभावतः एक होते हुये भी अस्तित्व , द्रव्यत्व ,वस्तुत्व ,प्रमेयत्व ,अगुरुलगुत्व ,प्रदेशत्व ,ज्ञान , दर्शन , सुख, वीर्य गुण के कारण अनेक है । इस प्रकार विश्व मे प्रत्येक द्रव्य अनेक विरोधी गुणों से एवम अविरोधी गुणों से युगपत (एक साथ)युक्त होने के कारण अनेकान्तमय है । कर्तिकेयानुप्रेक्षा मे स्वामी कार्तिकेय कहते है कि -

जं वत्थ अनेयतं तं चिय कज्म करेदी नियमेन ।

वहु धम्मो जुदम अथम कज्ज करम दिसदे लोए । । 225 । ।

एयंतं पूण द्व्म कज्म ण करेदी लेस मेतं पि । ।

जं पुनु ण करदी कज्म तं बुच्चदी केरिसम दव्म । ।226 । ।

अनेकान्तात्मक वस्तु ही अर्थक्रियाकारी है । एकांत रूप वस्तु लेशमात्र भी कार्य नहीं करता । अत: जो कार्य नहीं करता उसे द्रव्य कैसे कहा जा सकता है।

जिनेन्द्र वर्णी सिद्धांतकोष (4-496) मे लिखते है :-

" अनेकांतमयी वस्तु का कथन करने की पद्धति स्याद्वाद है । किसी एक समय वस्तु के सारे गुण धर्म युगपत कथन करना शब्दमे सिमित शक्ति होने के कारण अशक्य हो जा ता है अतः प्रयोजनवश कभी एक गुण को मुख्य करके कथन करते है उस समय अन्य गुण गौण रूप से(अविवक्षत)स्वीकार होते रहे उनका निषेध न होने पावे इस प्रयोजन से अनेकंतवादी अपने प्रत्येक वाक्य के साथ स्यात या कथंचित शब्द का प्रयोग करता है इस का अर्थ है किसी अपेक्षा से । "

"अनेकांत सिद्धान्त है व स्याद्वाद कथन पद्धति है"

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने पंचास्तीकाय की गाथा 14 मे स्याद्वाद के सात भंग (प्रकार) का उल्लेख इस प्रकार किया है ;-

सिय अत्थि णत्थी उहयं अव्वतवं पुणो य तत्ति दयम ।

दव्म खू सत्त भंगम आदेसवसेण संभवदि । ।

द्रव्य वास्तव मे 1. स्यात अस्ति ,2 स्यात नास्ति ,3 स्यात अवक्तव्य , 4 स्यात अस्ति - नास्ति , 5 स्यात अस्ति अवक्तव्य 6. स्यात नास्ति अवक्तव्य 7 . स्यात अस्ति नास्ति अवक्तव्य, इन सात भंग वाला है।

1. स्यात अस्ति - एक अपेक्षा से द्रव्य है । जैसे रामचंद्र दशरथ की अपेक्षा पुत्र है

2. स्यात नास्ति - अन्य अपेक्षा से द्रव्य नहीं । जैसे रामचंद्र लव कुश की अपेक्षा पुत्र नहीं है

3. स्यात अवक्तव्य - एक साथ दो गुणों का वर्णन एक शब्द मे नहीं होना । जैसे पिता पुत्र रूपी गुण को हम दशरथ एवम लव कुश की अपेक्षा एक शब्द मे वर्णन नहीं कर सकते । इसलिये अवक्तव्य यानि उत्तर देनेवाला चुप हो जाता है ।

4. स्यात अस्ति - नास्ति - स्वगुण की अपेक्षा एवम पर गुण की अपेक्षा जो क्रम से वर्णन किया जाता है उस भंग को अस्ति नास्ति भंग कहते है । जैसे रामचंद्र दशरथ की अपेक्षा पुत्र व लवकुश की अपेक्षा पुत्र नहीं है ।

5. स्यात अस्ति अवक्तव्य - क्रमशः स्वगुण की अपेक्षा द्रव्य हे और युगपत स्वपर की अपेक्षा वस्तु अवक्तव्यहै । जैसे रामचंद्र दशरथ की अपेक्षा पुत्र है और दशरथ एवम लवकुश की अपेक्षा युगपत अवक्तव्य है ।

6. स्यात नास्ति अवक्तव्य - क्रमशःपर गुण की अपेक्षा द्रव्य नहीं है और युगपत स्वपर गुण की अपेक्षा अवक्तव्य है । जैसे रामचंद्र लवकुश की अपेक्षा पुत्र नहीं है दशरथ तथा लवकुश की अपेक्षा युगपत अवक्तव्य है।

7. स्यात अस्ति नास्ति अवक्तव्य - क्रमशः स्वधर्म की अपेक्षा वस्तु है ,पर धर्म की अपेक्षा वस्तु नहीं है, युगपत स्वपर धर्म की अपेक्षा अवक्तव्य है। जैसे रामचंद्र दशरथ की अपेक्षा पुत्र है लवकुश की अपेक्षा पुत्र नहीं है ,दशरथ और लवकुश की अपेक्षा युगपत कहने की अपेक्षा अवक्तव्य है।

आचार्य कनाकनंदी अनेकांत सिद्धांत मे लिखते है कि -अनेकांत भावात्मक अहिंसा है स्याद्वाद वाचनिक अहिंसा है । अनेकांत एवम स्याद्वाद समन्वय के लिए , विश्वशांति के किये अमृत तुल्य है । अनेकांत मानसिक औषधि है एवम स्याद्वाद वाचनिक औषधि है। जो सत्य है वह मेरा है यह अनेकांत का अमर सन्देश है परन्तु मेरा जो कुछ है वह सब सत्य है मानना अनेकांत एवम स्याद्वाद की उदारनीति के विरुद्ध है ।

अनेकांत महत्वपूर्ण क्यों है :-

द्रव्य के सारे गुण धर्म पर्याय की सत्ता को स्वीकार करने से द्रव्यों के पूर्ण गुणादि की रक्षा होती है तथा मन मे यथार्थ भाव होने के कारण भाव अहिंसा होती है । अहिंसा का अर्थ दूसरों की सत्ता को स्वीकार करना भी है । स्याद्वाद से अन्य अविवक्षत धर्मो को वचन के माध्यम से घात नहीं पहुचाने के कारण वाचनिक अहिंसा हुई । विश्व मे जो अशांति ,विप्लव , युद्ध होता है उसका मूल कारण दूसरों की सत्ता को ठुकराना , अधिकार को स्वीकार नहीं करना ,उनके सत्यांश को मान्यता नहीं देना है परन्तु अनेकांत एवम स्याद्वाद उपरोक्त दोषों को दूर करते है , जिससे विश्व मे समन्वय एवम शांति की स्थापना हो सकती है । दोनों सिखाते है की जो सत्य है उस सत्य को बिना त्याग किये अन्य के संत्यांस को स्वीकार करो , सम्मान दो ।

रत्नत्रय (सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र) ही मोक्ष मार्ग है -इससे जीव बंधन मे नहीं पड़ता ,वरन बंधन से मुक्त होता है । सम्यक दर्शन आत्मा की प्रतीति को कहा जाता है । आत्मा का सम्यक प्रकार ज्ञान करना बोध -सम्यक ज्ञान कहलाता है । आत्मा मे स्थिर होना अर्थात लवलीन होना सम्यक चारित्र कहा जाता है । सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्ररूप तीन भाव जीव के

अक्षय अनंत, स्वभाव स्वरुप है । मिथात्व रूप प्रथम गुण स्थान मे दर्शन-ज्ञान चारित्र होते हुये भी उस गुण स्थान मे सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र का अभाव से मोक्ष का अभाव है। क्षायिकसम्यक दर्शन होने से चतुर्थ गुण स्थान मे सम्यक दर्शन की पूर्णता हो जाती है । परन्तु जीवन मुक्त नहीं है । 13 वे गुण स्थान मे केवल ज्ञान /जीवन मुक्त होते हुये भी मोक्ष नहीं है । क्योकि 13 वे गुण स्थान तक चारित्र की पूर्णता नहीं है । चारित्र की अपूर्णता का कारण मन - वचन काया (योग) मे परिस्पंधन है । अथ: अशरीर परम अथाख्यात चरित्र 14 वे गुण स्थान मे प्राप्त हो ते ही द्रव्य मोक्ष हो जाता है। सम्यक चारित्र की पूर्णता साक्षत मोक्ष का कारण है ।

आचार्य कनाकनंदी अनेकांत के प्रकश मे मोक्ष मार्ग मे सम्यक चारित्र के महत्त्व का उल्लेख करते हुये लिखते है कि - सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र मे पूर्व की प्राप्ति होने पर उत्तर की प्राप्ति भजनीय है अर्थात हो भी न भी हो । परन्तु उत्तर की प्राप्ति मे पूर्व की प्राप्ति निश्चित है । जिसे सम्यक चारित्र होगा उसे सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन अवश्य ही होगा । परन्तु जिसे सम्यक दर्शन है उसे पूर्ण सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र हो भी और न भी हो । क्षायिक सम्यक दर्शन की प्राप्ति होने पर क्षायिक ज्ञान हो और न भी हो किन्तु जहाँ क्षायिक ज्ञान है वहां क्षायिक सम्यक दर्शन निश्चित रूप मे होगा ही परन्तु वहां सम्पूर्ण क्षायिक सम्यक चारित्र हो भी और न भी हो । किन्तु जहाँ सम्पूर्ण क्षायिक चारित्र है वहां सम्पूर्ण क्षायिक सम्यक दर्शन व सम्पूर्ण क्षायिक ज्ञान होगा ही । इसप्रकार सम्यक चारित्र मे त्रयात्मक मार्ग रहेगा ही । चारित्र की उपादेयता सर्व व्यापक है । "**चारितं खलु धम्मो "** अर्थात चारित्र निश्चय से धर्म है । यदि धर्म नहीं रहा तो धर्मी (वस्तु) कैसे रह सकती है । यदि गुण (धर्म) नहीं तो गुणी (धर्मी) कैसे रह सकता है ।

अनेकांत मार्ग ही मोक्ष मार्ग है ;-

प्रत्येक कार्य के लिए योग्य अन्तरंग एवम बहिरंग कारणों के साथ साथ विरोधी कारणों का भी अभाव होना चाहिए । मोक्ष रूपी कार्य के लिए सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र अन्तरंग कारण है तो उत्तम शरीर ,आर्य क्षेत्र जैसे उत्तम क्षेत्र ,चतुर्थ काल जैसे काल रूपी बहिरंग कारणों के सदभाव तथा कषाय ,कर्म आदि विरोधी कारणों का अभाव चाहिए । सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र कारण है व मोक्ष कार्य है । सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र का एकीकरण ही अपुनरागमन (मोक्ष) पथ है । जो अपना स्वभाव है अर्थात अपने स्वभाव मे रमण करना ही अपुनरागमन पथ है । निश्चय से यह पथ पथिक (आत्मा) का स्वभाव है । यह पथ अचेतन द्रव्य मे नहीं पाया जाता है । तत्वार्थ सूत्र मे आचार्य उमास्वामी प्रथम पंक्ति मे बताते है कि -

सम्यकदर्शनज्ञानचरित्रानीमोक्षमार्ग: ॥1 ॥

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र इन तीनो का सम्यक संयोग रूप त्रयात्मक (रत्नत्रय:) मोक्ष का मार्ग है।

रत्नकरंड श्रावकाचार्य मे समंतभद्र स्वामी ने कहा भी है -

सदद्रष्टिज्ञान व्रत्तानी धर्म धर्मेश्वारा विदु: ।

यदीय प्रत्यनीकानी भवन्ति भवपद्धति ॥ 3 ॥

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र ही धर्म है ,मोक्ष का मार्ग है इसके विपरत मिथ्या दर्शन , मिथ्याज्ञान एवम मिथ्याचारित्र / कुचारित्र ही कुधर्म है ,दुःख का मार्ग है ,संसार का कारण है इसे धर्म के ज्ञाता धर्म के प्रभु ने बताये है ।

नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्रव्य संग्रह मे निश्चय - व्यवहार मोक्ष मार्ग का वर्णन करते हुये बताते है कि

सम्मददमसण णाण चरणम मोक्खस्स कारणम जाने ।

ववहारा निच्छयदो ततियमओ निओ अप्पा ॥ 39 ॥

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र इन तीनो के समुदाय को व्यवहार से मोक्ष का कारण जानो तथा निश्चय से सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र स्वरुप जो निज आत्मा है ,उसको मोक्ष का कारण जानो । रत्नत्रय आत्मा का अभिन्न स्वभाव है । स्वयं आत्मा ही निश्चय से मोक्ष मार्ग किस प्रकार है ? इस के बारे मे आचार्य उत्तर देते है कि -

रयणत्त्यम ण वततइ अप्पाण मुइत्तु अणदवी यम्ही ।

तम्हा तत्तियमइयो होदी हु मोक्खस्स करणम आदा । । 40। ।

आत्मा को छोड़ कर अन्य द्रव्य मे रत्नत्रय नहीं रहता है ,इस कारण उस रत्नत्रयमयी जो आत्मा है ,वही निश्चय से मोक्ष कारण है ।

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र आत्मा का स्वभाव होने पर भी स्वयं की दुर्बलता (विरोधी कारणों/कर्मो) का सुयोग लेकर मिथ्या दर्शन ,ज्ञान चारित्र आत्मा को अनादिकाल से चतुर्गति मे गमनागम करा रहा है । जब पथिक कालाधि लब्धि को प्राप्त करके त्रयात्मक अपुनरागमन पथ को प्राप्त कर लेता है तब वह अपने लक्ष्य से अभिमुख गमन करना प्रारम्भ कर देता है एवम सम्पूर्ण त्रयात्मक पथ को

प्राप्त करने के बाद वह कृत कृत्य होकर निवास करता है । इस त्रयात्मक मार्ग मे जिसके नेतृत्व मे कार्य प्रारम्भ होता है वह हुआ सम्यक दर्शन । इस के होने पर ही सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र होता है यह मोक्ष मार्ग मे ज्ञान व चारित्र की अपेक्षा श्रेठ एवम कर्णधार है । जीस प्रकार बीज के बीना वृक्ष की उत्त्पति नहीं हो सकती उसी प्रकार सम्यक दर्शन के बीना सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र की उत्त्पत्ति नहीं हो सकती ।मोक्ष मार्ग मे सम्यक दर्शन की प्राथमिकता का प्रतिपादन करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द बताते है कि धर्म रूप वृक्ष की मूल (जड़) सम्यक दर्शन है । सम्यक दर्शन की प्राप्ति तीन लोक के एश्वर्य से भी श्रेष्ठ है व मोक्ष मार्ग का प्रथम एवम प्रधान सोपान है ।

परन्तु सम्यक दर्शन से ही एकान्त से मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती । यदि दर्शन मात्र से मोक्ष माना जाय तो सम्यक दर्शन प्राप्ति के बाद 4 थे गुण स्थान के बाद मोक्ष मिल जाना चाहिए , उत्कृष्ट से अर्धपुद्गल परावर्तन काल पर्यंत क्यू संसार मे परीभ्रमण करते है ? क्षायिक सम्यक द्रष्टि के दर्शन मोहनीय के समस्त कर्मो का क्षय होजाने के बाद भी वह संसार मे क्यू भ्रमण करते है ।

यदि एकान्त से ज्ञान मात्र से ही मोक्ष माना जाय तो एक क्षण भी पूर्ण ज्ञान के बाद संसार मे ठहरना नहीं होना चाहिए ,परन्तु 13 वे गुण स्थान मे सम्पूर्ण ज्ञान होने पर तीर्थंकर उपदेश, तीर्थ प्रव्रती,मंगल विहार करते है । यदि ज्ञान मात्र से मोक्ष हो तो यह संभव नहीं की ज्ञान भी हो जावे और मोक्ष नहो हो. जैसे दीपक जल जावे और अंधेरा रहजावे । यदि पूर्ण ज्ञान होने पर परम यथाख्यात चारित्र व कुछ संस्कार (अघातिया कर्म)एसे रह जाते है जिसके नास हुये बीना मुक्ति नहीं हो सकती । फिर इन संस्कारों का क्षय ज्ञान से होगा या अन्य कारणों से ? यदि ज्ञान से है तो ज्ञान के होते ही संस्कारों का क्षय भी हो जावेगा और तुरंत मोक्ष हो जाने से तिर्थोपदेश आदि नहीं बन सकेगे । यदि संस्कार क्षय के लिए अन्य कारण अपेक्षित है तो वह चारित्र ही हो सकता है अन्य नहीं । मोक्ष प्राप्ति रूप कार्य तीनो कारणों से होता है । सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान से मोक्ष मार्ग का प्रारम्भ होता है एवम सम्यक चारित्र की पूर्णता से मोक्ष मार्ग की भी पूर्णता होती है ।

रत्नत्रयात्मक मोक्ष मार्ग होते हुये भी कभी सापेक्ष द्रष्टि से सम्यक ज्ञान को मोक्ष का कारण या कभी सम्यक चारित्र को मोक्ष का कारण या कभी सम्यक दर्शन को मोक्ष का कारण कहा है। मूलाचार , भगवती आराधना आदि शास्त्रों मे विशेषत: चारित्र को मोक्ष का कारण कहा गया है । समयसारादि अध्यात्मिक शास्त्र मे सम्यक ज्ञान को मोक्ष का कारण प्रतिपादित किया गया है । परुन्तु ज्ञान मोक्ष का कारण नहीं है और अज्ञान बंध का कारण नहीं है । इस सत्य का प्रतिपादन करते हुये समंतभद्र स्वामी आत्म मीमांसा मे कहते है कि यदि अज्ञानता से बंध होता तो 12 वे गुण स्थान का जीव(असर्वज्ञ) अनंत ग्ये को नहीं जान सकता तब वह केवली या मुक्त नहीं हो सकता । अत: इससे सिद्ध हो ता है कि केवलही अज्ञानता ही बंध का कारण नहीं है । यदि अल्प ज्ञान से मोक्ष मान लिया जावे तब अधिक

अज्ञानी हो ने से ही शिग्र मोक्ष हो जावे गा । इसलिये अज्ञानता भी मोक्ष का कारण नहीं है । इसका प्रतिपादन आचार्य स्वयं करते हुये लिखते है कि - मोह सहित अज्ञानता से बंध होता है और मोह रहित अज्ञानता से बंध नहीं हो ता है । मोह रहित कम ज्ञान से मोक्ष हो सकता है मोह सहित अनंत ज्ञान से / मिथ्या ज्ञान से बंध होता है ।

रत्नत्रय परस्पर विरोधी या घातक नहीं है परन्तु परस्पर अनुपूरक -परिपूरक तथा सहकारी है । सम्यक दर्शन से ज्ञान मे सम्यकपना आता है । सम्यक दर्शन एवम सम्यक ज्ञान से चारित्र मे सम्यक्त्वपना आता है तथा चारित्र मजबूत एवम उत्तरोत्तर विशुद्ध होता है । सम्यक दर्शन भवन के लिए नीवं के समान आधरशिला है । नीवं के बिना भवन नहीं टिकते पर नीवं भवन नहीं हो सकती है। इसीप्रकार सम्यक दर्शन के बिना रत्नत्रयरूप भवन नहीं टिकते पर सम्यक दर्शन ही केवल रत्नत्रय नहीं है । सम्यक ज्ञान दो कमरों के बीच स्थित देहली के ऊपर रखा हुआ दीपक के समान है । वह दीपक दोनों कमरों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार सम्यक ज्ञान रूपी दीपक सम्यक दर्शन व सम्यक चारित्र को प्रकाशित करता है

कारण - कार्य सम्बन्ध :-

रत्नत्रय व मोक्ष मे कारण कार्य सम्बंध है । रत्नत्रय आत्मा मे ही है और साधना अवस्था मे यह रत्नत्रय मोक्ष के कारण / मार्ग है जो सिद्ध अवस्था मे यही रत्नत्रय मोक्ष रूप कार्य या साध्य बन जा ते है । व्यवहार रूप भेद रत्नत्रय, निश्चय रूप अभेद रत्नत्रय के लिए कारण है और भेद रत्नत्रय साधना अवस्था मे कारण है तो सिद्ध अवस्था मे कार्य रूप हो जाते है /

श्रधा से मानकर ज्ञान से जानकर एवम आचरण से माना हुआ,जाना हुआ कार्य का संपादन होता है

अभेद रत्नत्रय रूप स्वशुद्ध परिणाम या परम यथाख्यात चारित्र को भाव मोक्ष कहते है इसके द्वारा ही समस्त द्रव्य कर्म का क्षय होता है । इस भाव मोक्ष द्वारा जो समस्त द्रव्य कर्मो का समग्र रूप से आत्मा से प्रथक्करण होता है उसे द्रव्य मोक्ष कहते है

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र एवम जीवादी सात तत्वों का यतार्थ ज्ञान प्रमाण व नय के द्वारा किया जा सकता है । वस्तु अनेकांत स्वरुप अर्थ् क्रियाकारित्व लक्षण वाली ,गुण पर्याय सहीत होती है । वस्तु के सपूर्ण अंश को ग्रहण करने वाला प्रमाण है तथा उसके एक निश्चित स्वरुप (अंश) को ग्रहण करने वाला नय होता है अर्थात वस्तु के अनेक धर्मो को ग्रहण करने वाला सम्यक अनेकांत प्रमाण है एवम वस्तु के एक धर्म को सापेक्ष ग्रहण करने वाला सम्यक एकांत नय है

प्रमाण- सम्यक ज्ञान को प्रमाण कहा गया है । मति ज्ञान , श्रुत् ज्ञान , अवधि ज्ञान , मनः पर्यय ज्ञान ,और केवल ज्ञान ये पांचों ज्ञान प्रमाण है। प्रत्यक्ष और परोक्ष की अपेक्षा इसके दो भेद है ।

प्रत्यक्ष प्रमाण - इन्द्रिय और मन की अपेक्षा से रहित केवल आत्मा द्वारा ही जानने वाला ,अतीन्द्रिय ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है । सकल और विकल इसके दो प्रकार है । केवल ज्ञान सकल प्रत्यक्ष, पूर्ण, परम सत्य है , अवधि ज्ञान व मनः पर्यय ज्ञान विकल प्रत्यक्ष है ।

परोक्ष प्रमाण - मती ज्ञान व श्रुत ज्ञान परोक्ष प्रमाण है । इन्द्रिय व् मन की सहायता से होने वाला ज्ञान हैं । यह ज्ञान अपूर्ण, दोष पूर्ण,संसय युक्त है।

नय के भेद -निश्चय व व्यवहार से नय के दो भेद है - द्रव्यार्थिक और पर्यायथिक - निश्चय का हेतु द्रव्यार्थिक नय है ,अभेद रूप से जो वस्तु का निश्चय करे वह निश्चय नय है । यह यथार्थ नय है । व्यवहार का हेतु पर्यायथिक नय है । भेद रूप से जो वस्तु का व्यवहार करे । यह अयथार्थ नय है । द्रव्यार्थिक और पर्यायथिक ये ही दो मूल नय है तथा दोनों ही परस्पर सापेक्ष मने गया है

यह अनेकंतात्मक मोक्ष मार्ग का अध्ययन ,श्रध्दान,मनन ,आचरण करके भव्य जीव अनंत सुख शांति प्राप्ति करे ।

जय जिनेन्द्र